रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम अकादमिक वर्ष – 2018.....

एम.ए. हिन्दी, पूर्वार्द्ध/उत्तरार्द्ध सेमेस्टर

(विकल्प प्रश्न पत्र .....)

आधुनिक हिन्दी काव्य, आचार्य विद्यासागर कृत मूक माटी महाकाव्य

अधिकतम अंक – 100 उत्तीर्ण अंक – 40

(आंतरिक मूल्यांकन – 30) (लिखित – 70)

इकाई–1 (अ) **व्याख्या खण्ड**–(मूकमांटी महाकाव्य के चारों खण्डों से व्याख्या हेतु कवितांश)

(ब) **समीक्षा खण्ड**–(संत काव्य परम्परा के साथ आचार्य विद्यासागर के व्यक्तित्व और रचना संसार के अलावा मूकमांटी पर आधारित प्रश्न)

इकाई–2 (अ) संत काव्य परम्परा

(ब) जैन संत काव्य परम्परा

इकाई–3 आचार्य विद्यासागर–व्यक्ति और रचनाकार

इकाई–4 हिन्दी साहित्य की महाकाव्य परम्परा और मूकमाटी महाकाव्य

इकाई–5 **तुलनात्मक अध्ययन**

महावीर वाणी, आचार्य कुन्दकुन्द, संत नामदेव, संत कबीर, संत कवि दादू, संतकवि नानक, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिओध', प्रसाद, निराला, दिनकर, मुक्तिबोध।

उद्देश्य–

वर्तमान मनुष्य अधिकाधिक सुख–सुविधा प्राप्त करने के लिए धन प्राप्ति की ओर आंख लगाये हुए है। वह शिक्षित होकर ऐशो–आराम की जिंदगी जीने के लिए या तो नौकरियो की ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहा है या घर बैठे बिना उद्यमशीलता के ही सम्पूर्ण सुख–सुविधा प्राप्त करना चाहता है। कोई भाग्य के नाम पर तो कोई कर्म के नाम पर तो कोई धर्म के नाम पर, तो कोई आरक्षण के नाम पर ऐनकेन प्रकारेण लक्ष्य प्राप्ति में दौड़ रहा है। जिसे मिल गया वो सिकन्दर और जिसे नही मिला वो मुकद्दर रूप में चल रहा है। पद और कद के मद में आपसी संबंध किनारे लगे हुए है। नैतिक मूल्यों का आज पतन ही हो रहा है। स्त्रियाँ घर–परिवार की, समाज संस्कृति की अग्रधुरी है। वे भी कहीं महिला सशक्तिकरण के नाम पर तो कहीं दहेज आदि के तो कहीं फेंशन के नाम पर या तो घुट रही हैं या मिट रही है। पुरूष अपने शक्तिशाली रूप का वर्चस्व बनाये रखना चाहता है इस हेतु वह शिष्टाचार के रूप में मुखौटे डाले कदाचार में ही लिप्त है। संतों के नाम पर आज त्याग के स्थान पर संग्रह–वृत्ति का बोलवाला है। सरकारें और संत अब गड्ड–मड्ड है।

साहित्य सहित का भाव है। वह लोक कल्याण का भाव रखता है। खास तौर पर कविता मनोरंजन के साथ मर्म/कर्म की सार्थकता भी प्रदान करती है। तप और साधना की कोख से उपजी कविता निश्चित रूप से महानतम उद्देश्यों को लेकर समाज, राष्ट्र और संस्कृति को रचती है। वह व्यक्ति को व्यक्तित्व में परिवर्तित करती है। ऐसी रचना और उसके रचनाकार को शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए।

महत्व–

आचार्य विद्यासागर तप और साधना, संयम और अपरिग्रह भावना के धनी है। वे संत काव्य के सृर्जनकर्ता है। समाजशास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से उन्होंने महत् काव्य के रूप में महाकाव्य मूकमांटी की रचना की है, जिसमें आध्यात्मिक रूप से बीज से वट की, व्यक्ति से व्यक्तित्व की, स्व से पर की,

श्रेय से प्रेय की, पुरुषार्थ चतुष्टय की, माटी से घड़ा बनने की यात्रा है। लौकिक रूप में (कविता प्रतीकात्मक संदेश देती है) वर्तमान की जो विसंगतियाँ है। भूमंडलीकरण या उत्तर आधुनिकता या विज्ञान के चरम से जो दृश्य उपज रहे हैं–जैसे मनुष्य का स्वार्थी होना, बिना श्रम किये पाने की लालसा रखना, अपना मंडन और दूसरों का खंडन करना, धर्म के नाम पर, जाति, वर्ण, भाषा के नाम पर परस्पर कलह करना, लोक तंत्र को भीड़ तंत्र बनाना, गणतंत्र के नाम पर धन तंत्र की स्थापना, आतंकवाद, स्त्री का प्राण–ग्रहण रूप, मूल्यहीनता आदि–आदि जो अराजकतायें या विसंगतियाँ दिखलाई दे रही है। मनुष्य के समुचित विकास में जो संघर्ष और चुनौतियाँ हैं। कविता समस्याओं का निदान खोजती है और बेखौप असत् का खंडन और सत् का श्रीमंडन करती है। आचार्य विद्यासागर के मूकमांटी महाकाव्य में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दी संत काव्य के बीज है तो जीवन निर्माण की योगशाला और प्रयोगशाला भी है। भाषा और शिल्प की दृष्टि से यह आज के समय की बेहतरीन कविता है तो रस प्रकृति, दर्शन भाव की व्याख्या करने वाली अदभुत अभिनव शास्त्र।

इसका अध्ययन–अध्यापन एक सार्थक विश्वास है। यह चरण को आचरण की ओर ले जाती है। यह कवित्त को मर्म की ओर ले जाती है।

आधार संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य विद्यासागर कृत मूक मांटी महाकाव्य – भारतीय ज्ञान पीठ, नई दिल्ली, सं. 1988
2. आचार्य विद्यासागर ग्रन्थावली–भाग–1, 2, 3, 4 – आचार्य ज्ञान सागर, बागर्थ विमर्श केन्द्र वयावर राजस्थान।
3. उत्तर भारत की संत साहित्य परम्परा – आचार्य परशुराम राम चतुर्वेदी, ~~लोक~~ भारती भंडार प्रकाशन इलाहाबाद।
4. मूकमाटी मीमांशा – भाग–1, 2, 3, संपा. प्रभाकर मांचवे और आचार्य राममूर्ति त्रिपाठी, भारतीय ज्ञान पीठ, नई दिल्ली, सं. 2007
5. महाकवि आचार्य विद्यासागर ग्रन्थावली परिशीलन – आचार्य ज्ञान सागर, बागर्थ विमर्श केन्द्र वयावर राजस्थान, 1998
5. विद्याधर से विद्यासागर – सुरेश सरल –
6. मूक मांटी महाकाव्य अनुशीलन – प्रो. शील चन्द्र जैन – छिंदवाड़ा जैन समाज, 1988
7. हिन्दी साहित्य की संत काव्य परम्परा के परिप्रेक्ष्य में आचार्य विद्यासागर के कृतित्व का अनुशीलन, डॉ. बारे लाल जैन, निर्ग्रन्थ साहित्य प्रकाशन, कलकत्ता, 1998 (निर्देशक डॉ. के.एल. जैन, ए.डी. उच्च शिक्षा जबलपुर)
8. मूक माटी चेतना के स्वर – डॉ. भागचन्द्र जैन भास्कर – सन्मति विद्यापीठ, नागपुर, आलोक प्रकाशन
9. हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ – जय किशन प्रसाद – अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पंचम सं. 2013
10. कबीर ग्रंथावली – श्याम सुन्दर दास – नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
11. संत कवि रैदास – पृथ्वी आजाद
12. नानक वाणी
13. महावीर वाणी के आलोक में हिन्दी का संत काव्य – डॉ. पवन कुमार जैन, पुखराज प्रकाशन, खतौली, 1998
14. उपाश्रम की छाँव में – मुनि निर्वेग सागर
15. प्रशान्त मती माता जी की मूकमाटी व्याख्या पर पाण्डुलिपि।
16. आचार्य विद्यासागर जी के हिन्दी काव्य में समाज दर्शन परम्परा और नवीनता – डॉ. सुरभि जैन (शोध प्रबंध 2017) – प्रकाशनाधीन